शिवतांडव स्तोत्रम्

श्री रावण कृतम्

जटाटवीगलज्जल प्रवाह पावितस्थले
गलेवलंब्य लंबितां भुजंगतुंग मालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनाद वड्डमर्वयं
चकार चंडतांडवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ 1 ॥

जटाकटाह संभ्रमभ्रमन्निलिंप निर्झरी
विलोल वीचि वल्लरी विराज मान मूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वल लल्ललाट पट्टपावके
किशोर चंद्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ 2 ॥

धराधरेंद्र नंदिनी विलास बंधु बंधुर
स्फुरद्दिगन्त सन्तति प्रमोद मान मानसे ।
कृपाकटाक्ष धोरणी निरुद्ध दुर्धरापदि
क्वचिद्दिगंबरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ 3॥

जटा भुजंग पिंगळ स्फुरत्फणामणि प्रभा
कदंब कुंकुम द्रव प्रलिप्त दिग्वधू मुखे ।
मदांध सिंधुर स्फुरत्त्वगुत्तरीय मेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ 4 ॥

सहस्र लोचन प्रभृत्य शेष लेख शेखर
प्रसून धूलि धोरणी विधूसरान्घ्रि पीठभू: ।
भुजंग राज मालया निबद्ध जाट जूटक:
श्रियै चिराय जायतां चकोर बंधु शेखर: ॥ 5 ॥

ललाट चत्वर ज्वलद्धनन्जय स्फुलिंगभा
निपीत पंच सायकं नमन्नि लिंप नायकं ।
सुधा मयूख लेखया विराज मान शेखरं
महा कपालि संपदे शिरो जटाल मस्तु न: ॥ 6 ॥

कराल भाल पट्टिका धगद् धगद् धगद् ज्ज्वलद्धनंजय
आहुती कृत प्रचंड पंच सायके ।
धरा धरेंद्र नंदिनी कुचाग्र चित्र पत्रक
प्रकल्प नैक शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ 7 ॥

नवीन मेघ मंडली निरुद्ध दुर्धरस्फुर
त्कुहू निशीथिणीतमः प्रबंध बद्ध कंधरः ।
निलिंप निर्झरी धरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः
कलानिधान बंधुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥ 8 ॥

प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंच कालिम प्रभा
वलंबि कंठ कंदली रुचि प्रबद्ध कंधरं ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांध कच्छिदं तमंत कच्छिदं भजे ॥ 9 ॥

अखर्व सर्व मंगळा कळा कदंब मंजरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणाम धुव्रतं ।
स्मरांतकं पुरांतकं भवांतकं मखांतकं
गजांत कांध कांतकं तमंत कांतकं भजे ॥ 10 ॥

जय त्वदभ्र विभ्रम भ्रमद्भुन्गमश्वस
द्विनिर्गमत्क्रम स्फुरत्कराल भाल हव्यवाट् ।
धिमि धिमि धिमि ध्वनन्मृदंग तुंग मंगळ
ध्वनि क्रम प्रवर्तित प्रचंड तांडवः शिवः ॥ 11 ॥

दृषद्विचत्र तल्पयोर्भुजंग मौक्तिकस्रजोर्ग
इष्ठ रत्न लोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः ।
तृणारविंद चक्षुषोः प्रजामही महेंद्रयो :
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहं ॥ 12 ॥

कदा निलिंप निर्झरी निकुंज कोटरे वसन्
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन् ।
विलोल लोल लोचनो ललाम भाल लग्नकः
शिवेति मंत्र मुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहं ॥ 13 ॥

इमं हि नित्य मेव मुक्त मुत्त मोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धि मेति संततं ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशन्करस्य चिंतनम् ॥ 14 ॥

पूजावसान समये दशवक्र गीतं
यः शंभु फूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथ गजेंद्र तुरंग युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ 15 ॥